अध्यक्ष का नव वर्ष संदेश

प्रिय भा. वि. प्रा. कर्मी साथियों,

हमने अभी ''वर्ष 2011 को विदाई'' दी है तथा ''2012'' में कदम रखा है अतः यह हम सबके लिए आवश्यक है कि हम आत्मनिरीक्षण करें व आज की तारीख में विद्यमान जमीनी हकीकतों का जायजा लें। मैं मानता हूँ कि हालांकि वर्ष 2011 की यात्रा सपनों के अनुरूप नहीं रही है फिर भी हमने इसे भली प्रकार पार किया है जिसके लिए आप सभी साधुवाद के पात्र हैं। हमारे कार्य निष्पादन के लेखे-जोखे का बारीकी से अध्ययन यह बताता हैं कि हमने अच्छा प्रदर्शन किया हैं। तथा अधिकांश लक्ष्यों को प्राप्त करने के कारण हमें ''सम्मान व प्रशंसा'' भी मिली हैं जिससे कि हम ''गर्व से सिर ऊंचा'' कर सकते हैं। अपने कथन को साबित करने के लिए मैं भोपाल, शिलांग, पेक्योंग हवाई अड्डे पर निगमित सामाजिक दायित्वों की पहल सहित पेक्योंग एयरपोर्ट पर किए गए अच्छे कार्य की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। आई एन एस डी ए जी (स्टील विकास व वर्धन संस्थान) द्वारा स्टील संरचना डिजाइन तथा निर्माण के लिए आयोजित राष्ट्रीय प्रतियोगिता में हमारे अहमदाबाद, अमृतसर तथा त्रिवेन्द्रम हवाई अड्डों को दूसरा व तीसरा पुरस्कार प्रदान किया गया है। पेक्योंग हवाई अड्डा ''स्वर्ण श्रेणी'' में पेक्योंग की निगमित सामाजिक दायित्व पहल विजयी हुई है। हमें प्रथम एशिया प्रशांत क्षेत्रीय एशियाई सम्मेलन आयोजित करने का अद्वितीय अवसर प्राप्त हुआ तथा हमने इसे न केवल हाथों-हाथ लिया अपितु उत्कृष्ट कार्य किया जिसे प्रत्येक गणमान्य प्रतिभागी ने सराहा। इस अवसर का सदुपयोग हवाई अड्डा अवसंरचना के उन्नयन/आधुनिकरण तथा इन्हें विश्व स्तर तक लाने के हमारे कार्य को प्रदर्शित करने हेतु किया गया। भा.वि.प्रा. में सीएनएस-एटीएम के क्षेत्र में हमारी पहल व उत्कृष्ट कार्य का इकाओ की एपीएएनपीआईआरजी (एशिया प्रशांत विमान दिक्चालन योजना व कार्यन्वयन, क्षेत्रीय समूह) की बैकांक, थाईलैंड में सितम्बर 2011 में आयोजित बैठक में न केवल संज्ञान लिया गया अपितु इसे सराहा गया तथा सदस्य देशों के बीच आम राय यह थी कि सभी को भा.वि.प्रा. की सलाह लेनी चाहिए तथा उसका अनुसरण करना चाहिए।

खेल व कल्याण के क्षेत्र में हमने भारत में उच्चतम, श्रेणी 17 के अन्तराष्ट्रीय ग्रैंड मास्टर शतरंज टूर्नामेंट का आयोजन कर नया रिकार्ड बनाया, भा.वि.प्रा. के खिलाडियों के व्यक्तिगत/ टीम स्पर्धा में राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय स्तर के प्रदर्शन में बहुत सुधार हुआ है तथा उन्होंने भा.वि.प्रा. के लिए कई सम्मान प्राप्त किए। पहली ऑल महिला कार रैली का आयोजन इस क्रम मे अंतिम बड़ा आयोजन रहा है। निःसंदेह ऐसे आयोजनों से हमारी प्रतिष्ठा बढ़ी है तथा उत्कृष्ट प्रगति का प्रदर्शन हुआ है।

उपर्युक्त के होते हुए भी यह समझ लेना चाहिए कि हम अपनी पिछली उपलब्धियों पर आत्मसंतुष्ट रहने का खतरा नहीं उठा सकते क्योंकि इससे हममें स्वतः ही शिथिलता आएगी व यह किसी भी स्थिति में स्वीकार्य नहीं है। अतः मेरे सहकर्मियों को अपने को सक्रिय रखते हुए उसी उत्साह व उमंग से कार्य करते रहें क्योंकि अभी हमें कई पड़ाव पार करने हैं।

इस अवसर पर हम अपने परिवारों के त्याग व योगदान को कैसे भूल सकते है जो नेपथ्य मे रहकर कार्यरत थे व जिनके असीम समर्थन के बिना हम वहां नहीं पहुंच सकते थे जहां हम हैं? मुझे लेशमात्र भी संदेह नहीं हैं कि वे हमारी प्रशंसा के पात्र हैं।

इससे पहले कि मैं इस वर्ष के संदेश को समाप्त करूं, मैं वर्ष 2012 की विषय-वस्तु का उल्लेख करना चाहूंगा जो कि ''सक्रिय भा.वि.प्रा. कर्मी उज्जवल भविष्य की ओर'' है।

वि०प्र० अग्रवाल

01 जनवरी 2012

(वि.प्र. अग्रवाल)